सरदार वल्लभभाई पटेल

(एक जीवनी)

लेखक

श्री रतनलाल बंसल

विनोद पुस्तक मन्दिर

जुलाई १९४८ मूल्य ।=)

प्रकाशक
विनोद पुस्तक मन्दिर
हास्पिटल रोड, आगरा

मुद्रक
श्री हनूमान प्रिंटिंग वर्क्स,
गुड़ की मण्डी, आगरा।

सरदार वल्लभ भाई पटेल

हमारे देश के सब से बड़े नेताओं में से एक नेता सरदार वल्लभ भाई पटेल हैं, जो इस समय भारत की राष्ट्रीय सरकार के उप प्रधान मंत्री हैं, और जिन्होंने करीब-करीब अपनी आज तक की समस्त आयु देश-सेवा के कार्यों में ही व्यतीत की है।

सरदार वल्लभ भाई पटेल की जन्म भूमि गुजरात प्रान्त के पेटलाद तालुका के करमसद ग्राम है। जहाँ ३१ अक्टूबर १८७५ ई० को उनका जन्म हुआ। इस इलाके में मुख्य रूप से दो जातियाँ निवास करती हैं, जिनमें से एक तो 'लवा' और दूसरी को 'कदवा' कहा जाता है। यह जातियाँ अपने को भगवान राम के पुत्र लव और कुश के वंशज बताती हैं। सरदार वल्लभ भाई इन में एक जाति 'लवा' जाति के पुत्ररत्न हैं। सरदार वल्लभ भाई जैसे पुत्र को पाकर यह जाति भी धन्य हो गई है।

वल्लभ भाई पटेल के पिता का नाम श्री झवेर भाई पटेल था। रुपये पैसे के लिहाज से वे कुछ अधिक मालदार नहीं थे। उनके यहाँ खेती होती थी और उनकी कुछ अपनी निजी जमीन भी थी, लेकिन हिम्मत के वह धनी थे और सब से बड़ी बात उनमें यह थी कि ज्यादा पढ़े-लिखे न होने पर भी देश की बातों को खूब समझते थे। इसीलिये सन् १८५७ में जब हमारे देश

में कुछ देश-भक्तों ने अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ाई शुरू की, तो उन को यह सहन नहीं हुआ कि वे तो मजे में खेती-बाड़ी करते रहें तथा घर-ग्रहस्थी चलाते रहें और दूसरी ओर हमारे देश के लाखों सपूत स्वाधीनता के लिये अपने प्राण अर्पित करते रहें। इसलिये लड़ाई का बिगुल बजाते ही झबेर भाई ने अपना हल घर के एक कोने में डाला और झाँसी की महारानी लक्ष्मी बाई की फौज में आकर भर्ती हो गये। झबेर भाई लगभग तीन वर्ष तक अंग्रेजों और उनके हिन्दुस्तानी हिमायतियों से लड़ते रहे। लेकिन इसके बाद इन्दौर के महाराजा ने उनको पकड़ कर अपने महलों में कैद कर लिया।

एक बार इन्दौर के महाराजा उसी कमरे के पास बैठकर शतरंज खेलने लगे, जिसमें झबेर भाई कैद थे। झबेर भाई भी सीकचों के भीतर से शतरंज देख रहे थे। कुछ ही देर में झबेर भाई ने देखा कि राजा एक ऐसी चाल चल रहे हैं, जिससे वह जरूर हारेंगे। इस पर झबेर भाई ने सींखचों के भीतर से कहा, "राजा! खोटी चाल मत चल, बल्कि इस मुहरे की जगह उस मुहरे को चल। राजा ने झबेर भाई की बात मानली और खेल में वे जीत गये। अब राजा को मालूम हुआ कि झबेर भाई जितने बहादुर हैं, उतने ही बुद्धिमान भी हैं। झबेर भाई को जेल में रखना उनको उचित नहीं मालूम हुआ और तुरन्त उनको छोड़ दिया। झबेर भाई घर पर आकर फिर खेती करने लगे।

इसके बाद झबेर भाई के दो पुत्र हुए, जिनमें से बड़े का नाम विठ्ठल भाई और छोटे का नाम वल्लभ भाई रक्खा गया। विठ्ठल भाई आज इस संसार में नहीं हैं। लेकिन देश के तमाम पढ़े-लिखे लोग आज भी उनका नाम बड़े आदर के

साथ लेते हैं। सरदार वल्लभ भाई की ही भाँति वे अपने जमाने के बहुत बड़े नेता समझे जाते थे। देश की आजादी के लिये बिठ्टल भाई भी अनेकों वार जेल गये थे और उनमें सबसे बड़ा गुण यह था कि उनमें हिन्दू-मुसलमनों के लिये कोई भेद-भाव नहीं था। सन् १६२४ से सन् १६२७-२८ तक जब हमारे देश भर में हिन्दू-मुमलमानों के दंगे हुए, और हमारे देश के अनेक बड़े-बड़े नेता उस हवा में वह कर बहकी बहकी बातें करने लगे थे, उस समय भी बिटठ्ल भाई पटेल हिन्दू-मुस्लिम एकता की कोशिश करने लगे हुए थे। इसके बाद बिटठ्ल भाई हमारे देश की सब से बड़ी ऐसेम्बली के प्रधान भी चुने गये और उस पद पर बैठ कर उन्होंने उस जमाने के अंग्रेज अफसरों को ऐसी डॉट बताई थी कि उनकी सारी हेकड़ी छूमन्तर होगई थी। वे बिटठ्ल भाई के नाम से डरने लगे थे।

अपने पिता जी और अपने बड़े भाई की भांति देशभक्ति और निर्भयता का गुण वल्लभ भाई में भी बचपन से ही है। शुरू की शिक्षा तो इनको पिता के द्वारा ही मिली। वे खेतों पर जाते, तो साथ में अपने पुत्रों को भी ले जाते और रास्ते में उनको पहाड़े याद कराते चलते। इसके बाद उन्होंने पेटलाद की पाठशाला में वल्लभ भाई को भर्ती करा दिया। जब वहाँ की शिक्षा समाप्त हो गई, तो वल्लभ भाई को नाडियाद के हाईस्कूल में भेजा गया। यह वल्लभ भाई के लिये नया जीवन था। पर वल्लभ भाई पर कभी कस्बों या शहरों की चमक-दमक का असर न पड़ा। गांव के लड़के जब शहरों में रहने आते हैं, तो शहरी लड़कों से कुछ दबे-दबे से रहते हैं। लेकिन वल्लभ भाई में यह बात नाम को भी नहीं थी। स्कूल में आते ही उन्होंने देखा कि एक मास्टर ने किताबों की दूकान भी

खोल रक्खी है और वे सब लड़कों पर यह दबाव डालते थे कि जिस से किताब खरीदनी हो, उनसे ही खरी दें। यदि कोई लड़का किसी दूसरी जगह से किताब खरीद लाता, तो वह मास्टर उस लड़के को तरह-तरह से तंग करता था वल्लभ भाई ने यह सब हाल देखा, तो वे चुप नहीं रह सके। इन्होंने लड़कों से कहना शुरू किया कि किसी भी दूसरी जगह से किताब खरीद लो, लेकिन इस मास्टर से हर्गिज मत खरीदो। इस पर मास्टर ने लड़कों को तंग करना शुरू किया वल्लभ भाई ने पहिले तो मास्टर को समझाया, लेकिन जब वह नहीं माना तो वल्लभ भाई ने स्कूल में हड़ताल करा दी। ५-६ दिन स्कूल बन्द पड़ा रहा अन्त में मास्टर ने अपनी गलती मन्जूर की, तब कहीं स्कूल फिर खुल सका। इस प्रकार बचपन से वल्लभ भाई का स्वभाव बड़ा तेजस्वी था और किसी की ज्यादती उन पर नहीं सही जाती थी।

नाडियाद की शिक्षा पूरी करके वल्लभ भाई बड़ौदा पहुँचे। वहाँ दसवें दर्जे में उन्होंने संस्कृत के स्थान पर गुजराती ली। उस स्कूल में छोटेलाल नाम के एक सज्जन गुजराती पढ़ाते थे, लेकिन वह संस्कृत के बड़े भक्त थे। जो लड़का संस्कृत नहीं लेता था, उससे वह चिढ़ते थे। वल्लभ भाई जब उनकी कक्षा में पहुँचे, तो वे इनका हाल सुन कर व्यंग से बोले, "पधारो, "महापुरुष !" इसके बाद पूछा।

"कहाँ से पधारे ?"

वल्लभ भाई ने शान्ति पूर्वक उत्तर दिया—

"करमसद से।"

मास्टर बोले, "संस्कृत छोड़ कर गुजराती ले रहे हो

क्या तुमको नहीं मालूम कि संस्कृत के बिना गुजराती नहीं शोभती।"

वल्लभ भाई समझ गये कि इन मास्टर साहब से भी लड़ाई चलेगी। उन्होंने एक तीखा-सा जवाब दे दिया। मास्टर साहब ने नाराज होकर इनको सजा देनी शुरू की कि घर से 'पाड़े' यानी पहाड़े लिख कर लाया करो। वल्लभ भाई दो चार दिन 'पाड़े' लिख कर ले जाते लेकिन उसके बाद उन्होंने 'पाड़े' लिख कर ले जाना बन्द कर दिया। गुजराती में 'पाड़े' पहाड़ों को भी कहते हैं और पाड़े गाय भैंस के बच्चों को भी कहते हैं। इसलिये एक दिन जब मास्टर ने पूछा, "वल्लभ! तुम पाड़े क्यों नहीं लाये?' तो वल्लभ भाई ने उत्तर दिया, "मास्टर साहब! पाड़े लाया तो था। लेकिन स्कूल के दर्वाजे पर आते ही वे सब भड़क कर भाग गये।"

मास्टर के साथ होने वाले इन झगड़ों की वजह से वल्लभ भाई बड़ौदा स्कूल से निकाल दिये गये और उन्होंने दसवें दर्जे की परीक्षा नाडियाद से दी। इस प्रकार बचपन में वल्लभ भाई बहुत ही नटखट थे।

दसवाँ दर्जा पास करने के बाद वल्लभ भाई ने अनुभव किया कि अगर वे कालेज में दाखिल हुए, तो उसका खर्च जुटाने में माता-पिता को बहुत कष्ट होगा। इसलिये उन्होंने मुख्तारी की परीक्षा पास की और गोधरा में वकालत करने लगे। कुछ दिनों बाद वल्लभ भाई गोदरा से बोरसद चले गये और वहाँ फौजदारी की अदालत में वकालत करने लगे, कुछ ही दिनों में वल्लभ भाई की वकालत खूब चलने लगी, क्योंकि अपने मुकदमों में वल्लभ भाई बहुत ज्यादा मिहनत करते थे। बुद्धि तो इतनी तीव्र थी ही, इसलिये यह ऐसी-ऐसी बारीक और

कानूनी बातें निकालते थे कि ज्यादातर मुकदमों में वल्लभ भाई की ही जीत होती थी। इनकी दलीलों से अदालत के हाकिम दंग रह जाते थे। छोटे-मोटे अधिकारी और पुलिस के अफसरों पर तो वल्लभ भाई का ऐसा रौब छा गया था कि वे उनके नाम से काँपने लगते थे। उन दिनों हस्वेंड नामक एक अंग्रेज मजिस्ट्रेट वहाँ था, जो इतना बदमिजाज था कि वकीलों से हाल अंट-शंट बकने लगता था। एकबार उसका पाला वल्लभ भाई से पड़ गया, तो उसको वल्लभ भाई ने इतना परेशान किया कि हमेशा के लिये साहब की अकड़ ढीली हो गई। वल्लभ भाई में भय तो नाम को भी नहीं था।

पत्नी की मृत्यु

इन दिनों ही गोधरा में बड़ा भयंकर प्लेग फैला। एक दिन अदालत में नागर का लड़का भी प्लेग की चपेट में आ गया। वल्लभ भाई ने उस लड़के की बहुत सेवा की। लेकिन वह लड़का बच नहीं सका। वल्लभ भाई उसकी दाहक्रिया करके जब घर लौटे, तो उनके भी गिल्टी निकल आई। अक्सर किसी आदमी पर प्लेग का असर होता है, तो वह इतना ज्यादा घबड़ा जाता है कि उसे सम्हालना मुश्किल हो जाता है। लेकिन वल्लभ भाई ने शान्ति के साथ अपनी पत्नी को तो करमसद भेज दिया, जिससे कहीं वह भी बीमार न पड़ जाय और खुद नाडियाद चले गये। बेचारी पत्नी ऐसी हालत में वल्लभ भाई ने जबरदस्ती उसे भेज दिया। लेकिन परिणाम उलटा हुआ। वल्लभ भाई तो नाडियाद पहुँच कर अच्छे हो गये, लेकिन उनकी पत्नी करमसद जाकर बीमार पड़ गई। वल्लभ भाई तुरन्त उसे आप्रेशन के लिये बम्बई ले गये, लेकिन वहां भी उनका इलाज न हो सका। एक दिन वल्लभ भाई किसी मुकदमें

में बहस कर रहे थे कि उनको एक तार मिला। वल्लभ भाई ने तार खोल कर देखा कि उसमें पत्नी का देहान्त का समाचार है। लेकिन वल्लभ भाई ने तार मेज पर रख कर बहस जारी रक्खी। जब वे मुकदमे का काम समाप्त कर चुके, तब उन्होंने अपने मित्रों से तार की चर्चा की। मित्र उनका धीरज देख कर चकित रह गये।

बैरिस्टर बने

वल्लभ भाई के पास वकालत की आमदनी से जब कुछ रुपया एकत्रित हो गया, तब उन्होंने बैरिस्टरी पास करने का निश्चय किया और विलायत जाने के लिये पासपोर्ट की दरख्वास्त देदी। पासपोर्ट आ गया, लेकिन वह वल्लभ भाई के बड़े भ्राता विट्ठल भाई के हाथ लग गया। विट्ठल भाई ने पासपोर्ट देखा, तो उनको भी विलायत जाने और बैरिस्टरी पास करने का लालच हो आया। उन्होंने वल्लभ भाई को समझाया, देखो, मैं तुम से कुछ साल बड़ा हूँ। इस पासपोर्ट से तुम मुझे विलायत हो आने दो, क्योंकि तुम तो कुछ साल बाद भी जा सकते हो, लेकिन मैं तो फिर नहीं जा सकता, क्योंकि उम्र ज्यादा हो जाने की वजह से फिर मैं बैरिस्टरी के इम्तहान में नहीं बैठ सकूंगा।

वल्लभ भाई को अपने बड़े भाई की दलील जच गई और अपनी जगह अपने बड़े भाई को इंगलैंड भेज दिया विट्ठल भाई तीन बरस में बैरिस्टरी पास करके वापस आ गये, तब वल्लभ भाई विलायत पहुँचे। इंगलैंड में रह कर उन्होंने बैरिस्टरी के लिये इतना परिश्रम किया कि देखने वाले दांतों तले उंगली दाब गये। वल्लभ भाई लन्दन में जिस जगह रहते थे, वहां से इनर-टेम्पुल का पुस्तकालय ११ मील दूर था। वल्लभ भाई इंगलैंड

की कड़कड़ाती सर्दी में बहुत सबेरे उठते और स्नान-ध्यान से निवृत्त होकर पुस्तकालय पहुँच गये, वहाँ से वे तब उठते, जब पुस्तकालय ही बन्द हो जाता था दोपहर का भोजन वहीं दूध रोटी मँगा कर खा लेते थे। इन दिनों वल्लभ भाई सत्रह-सत्रह घंटे लगातार पढ़ते रहते थे। इसका फल यह हुआ कि बैरिस्टरी परीक्षा में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए। इम्तहान के पर्चों के उत्तर इन्होंने लिखे, उनको पढ़ कर इम्तहान लेने वाले परीक्षक आश्चर्य से दंग रह गये। वल्लभ भाई को ५० पोंड की एक छात्रवृत्ति मिली और चार बार की फीस माफ होगई। परीक्षा लेने वाले एक सज्जन ने भारत के एक हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस मि० स्काट के नाम वल्लभ भाई के लिये सिफारिशी पत्र लिखा जिसमें वल्लभ भाई की बहुत प्रशंसा की गई थी। और आग्रह किया गया था कि ऐसे व्यक्ति को तो न्याय विभाग में कोई ऊंची नौकरी दी जानी चाहिये, जिससे इसकी प्रतिभा का लाभ सरकार को मिल सके।

वल्लभ भाई जब तक इंगलैंड में रहे, इतने सीधे सादे ढंग से रहे, कि देखकर आश्चर्य होता था। प्रायः भारतवासी जब विलायत में पहुँचते हैं, तो वहां के सैर सपाटों में पड़ जाते हैं, लेकिन वल्लभ भाई को तो किसी सिनेमा या नाटक में भी नहीं देखा गया। इसके बाद जब परीक्षा का परिणाम घोषित होगया, तो वल्लभ भाई एक दिन के लिये भी विलायत में रुके नहीं। जब परीक्षाफल निकला, उसके दूसरे दिन ही वे भारत आने वाले एक जहाज में सवार हो गये और अपने घर वापस लौट आये।

देश में आकर वल्लभ भाई ने अहमदाबाद में बैरिस्टरी करना आरम्भ किया। उस समय श्री विट्ठल भाई बम्बई में

वैरिस्टरी कर रहे थे, और वैरिस्टरी के साथ-साथ जनता के कार्यों में भी भाग लेते थे। इससे उनकी वैरिस्टरी की आमदनी में बड़ा फर्क आ जाता था, लेकिन जनता की सेवा भी करनी ही चाहिये, इस विचार के कारण वे इस घाटे को सहन कर लेते थे। लेकिन जब वल्लभ भाई वैरिस्टरी पास करके वापस आये, तब दोनों भाइयों ने यह फैसला किया कि बड़े भाई यानी विट्ठल भाई तो जनता की सेवा इसी प्रकार करते रहेंगे। लेकिन छोटे भाई यानी वल्लभ भाई केवल रुपया पैदा करने की ओर ही ध्यान लगावेंगे और घर-गृहस्थी का काम-काज संभालेंगे ? वल्लभ भाई ने कुछ दिनों तक इस निश्चय पर पूरी तरह अमल किया। कुछ ही दिनों में उनकी वैरिस्टरी खूब चलने लगी और उसके साथ आमन्दनी भी अच्छी होगई। वल्लभ भाई इस समय बिल्कुल रईसों की भांति रहते थे। आज बल्लभ भाई की सादगी देखकर तो कोई कह भी नहीं सकता कि यही व्यक्ति एक दिन ऐसे शौक मौज से भी रहता होगा। अपनी इस पुरानी जिंदगी की याद करते हुए बल्लभ भाई ने एक बार खुद ही आपने भाषण में कहा था ,

"मैं दुर्गा पूजा की छुट्टियों के दिन सैर-सपाटों और आनन्द में गुजारता था। उस समय मैं यही मानता था कि इस अभागे देश के निवासियों के लिये यही अच्छा है कि वे विदेशियों यानी अंग्रेजों के रहन-सहन की नकल करें। मैंने स्कूल कालेजों में जो कुछ पढ़ा था, उससे मैं इसी नतीजे पर पहुँचा था कि हमारे देश वाले नासमझ हैं और हम पर राज करने वाले अंग्रेज समझदार हैं और उनमें अनेकों गुण हैं। हमारे देश वासी तो सिर्फ गुलामी ही कर सकते हैं।"

गांधीजी से सम्पर्क

वल्लभ भाई के दिन इसी तरह आराम से कट रहे थे, कि यकायक एक दिन उन्होंने अपने मित्रों से सुना कि मोहनदास गांधी नामक एक व्यक्ति दक्षिण अफ्रीका से भारत आया है जो अहमदाबाद आने वाला है। यह आदमी बैरिस्टर होने पर भी बड़ी सादगी से रहता है और दूसरों को भी सादगी से रहने की शिक्षा देता है। बात-चीत में अत्यन्त नम्र है क्रोध तो जैसे कभी उसको आता ही नहीं है। दुबला पतला है, लेकिन शक्ति शाली इतना है कि दक्षिण अफ्रीका की इतनी बड़ी सरकार को इसके सामने घुटने टेक देने पड़े। अब यह व्यक्ति अहमदाबाद में ही रहेगा।

वल्लभ भाई ने इस समाचार को सुना और भूल गये। इसके बाद एक दिन गान्धी जी को उन्होंने वकीलों के एक क्लब में देखा और उनसे परिचय भी हुआ, लेकिन गान्धी जी की बातें वल्लभ भाई को मोह नहीं सकीं। वल्लभ भाई ठहरे छैल-छबीले रसिया और गान्धी जी की बातें रूखी-सूखी होती थीं। प्रायः यह होता था कि गान्धी जी वल्लभ भाई के अन्य साथियों से बात करते थे और वल्लभ भाई मजे से ताश खेलते रहते थे। वल्लभ भाई कहा करते थे कि गान्धी जी त्याग और ब्रह्मचर्य की जो शिक्षा हम लोगों को देते हैं, वह तो भैंस के आगे बीन बजाना है। क्योंकि हम लोगों को लंगोटी लगा कर तो फिरना नहीं है. घर गृहस्थी जमानी है और आराम के साथ अपनी जिन्दगी चलानी है; फिर हम गान्धी जी की इन शिक्षाओं को पढ़ने-सुनने में अपना समय क्यों नष्ट करें।

गान्धी जी भी वल्लभ भाई के विचारों से परिचित थे, इसलिये अगर ताश खेलते-खेलते कभी वल्लभ भाई गान्धी जी

की बातों पर ध्यान देने लगते, तो गान्धी जी तुरन्त उलाहना देते हुए मीठे शब्दों में कहते, "देखो वल्लभ भाई! यह आप क्या करने लगे? अपने ही काम में चित्त दो न? वरना बाजी हार . गये, तो कैसा होगा।" इस प्रकार वल्लभ भाई और गान्धी जी में उन दिनों प्रायः मीठा मजाक होता रहता था।

गान्धी जी का प्रभाव पड़ने लगा

लेकिन गान्धी जी की बातों का धीरे-धीरे वल्लभ भाई के चित्त पर प्रभाव पड़ने लगा। वे देखते; कि गान्धी जी के उसूलों पर अगर चला जाय; तो अपने देश के हजारों लाखों गरीब आदमियों का उद्धार हो सकता है।

धीरे-धीरे वल्लभ भाई का झुकाव भी राजनीति की ओर होने लगा और वे एकबार गोधरा की प्रान्तीय राजनैतिक कान्फ्रेंस के सभापति बन गये इस कान्फ्रेंस में यह प्रस्ताव पास हुआ कि गुजरात प्रान्त में जो बेगार ली जाती है, वह तुरन्त बन्द होनी चाहिये। कुछ दिन बाद गान्धी जी तो चम्पारन चले गये, इसलिये तमाम जिम्मेदारी वल्लभ भाई के सिर पर आ पड़ी। वल्लभ भाई किसी भी काम को अधूरा तो छोड़ नहीं सकते थे, और डर उन्होंने बचपन से ही नहीं जाना था। इसलिये उन्होंने कमिश्नर को एक पत्र लिखा कि आपके इलाके में जो बेगार चल रही है, उसे आप तुरन्त बन्द करादें। कमिश्नर ने इस पत्र का कोई उत्तर नहीं दिया। इस पर वल्लभ भाई ने कमिश्नर को सात दिन का नोटिस दे दिया कि अगर इस अवधि में बेगार बन्द न हुई, तो वे जनता में यह प्रचार करेंगे कि कोई आदमी बेगार न दे। इस पर कमिश्नर ने वल्लभ भाई को मिलने के लिये बुलाया और उनके मनके मुताबिक

काम कर दिया। सरकारी पक्ष पर वल्लभ भाई की यह पहिली विजय थी।

खेड़ा सत्याग्रह में

गान्धी जी चम्पारन का काम खत्म करके जब अहमदाबाद वापस आये, तो वे यह देख कर दंग रह गये, कि जो वल्लभ भाई गान्धी जी की बातों का सब से ज्यादा मजाक बनाते थे, वही अब उनकी बातों को सब से ज्यादा ध्यानपूर्वक सुनते है। कुछ दिन बाद ही खेड़ा में सत्याग्रह करने का विचार हुआ, क्योंकि अकाल पड़ जाने के कारण वहाँ की प्रजा इस लायक नहीं थी कि लगान अदा कर सके और सरकार पूरा लगान वसूल करलेना चाहती थी। एक दिन गान्धी जी ने अहमदाबाद में अपने मित्रों से इसकी चर्चा करते हुए पूछा कि मेरे साथ खेड़ा जाने के लिये कौन-कौन तय्यार है; तो सब से पहिला नाम वल्लभ भाई ने दिया। गान्धी जी भी ऐसे दृढ़ साथी को पाकर धन्य हो गये और वल्लभ भाई ने बड़ा कठोर परिश्रम किया। गान्धी जी ने जब सत्याग्रह का ऐलान किया, तो वल्लभ भाई खेड़ा प्रान्त के ग्राम-ग्राम घूमे। वल्लभ भाई की पिछली जिंदगी देखते हुए कोई यह सोच भी नहीं सकता था, कि दिन-रात मौज-शौक में डूबा रहने वाला अहमदाबाद का यह सब से बड़ा बैरिस्टर एक दिन गांव-गांव में पैदल घूमता हुआ भी दिखाई दे सकता है। वल्लभ भाई के इस दौरे का यह असर हुआ कि तमाम इलाके के किसान कमर बाँध कर उठ खड़े हुए। सरकार को भी अन्त में झुकना ही पड़ा और हजारों किसानों की मुसीबतें इससे दूर हो गईं। उस दिन से गान्धी जी के आदर्शों के अनुसार ही वल्लभ भाई अपना जीवन व्यतीत करने लगे और अ[illegible] [illegible]ी उ[illegible]के ही अनुसार चल रहे हैं।

असहयोग आन्दोलन में

इसके बाद सन् १९२०-२१ में जब असहयोग आन्दोलन प्रारम्भ हुआ और गान्धी जी ने देश भर के वकीलों से अपनी वकालतें छोड़ने के लिये कहा, तब वल्लभ भाई ने भी वकालत छोड़ दी। यों भी अब उनका जीवन इतना सेवा में हो गया था कि वकालत के लिये समय ही कहाँ मिलता था? फिर भी असहयोग आन्दोलन में पड़ कर तो वल्लभ भाई बिल्कुल ही जनता के सेवक बन गये। उन दिनों ही वे अपने पुत्र और पुत्रियों को शिक्षा प्राप्त करने के लिये विलायत भेजने वाले थे, लेकिन असहयोग आन्दोलन के समय गान्धी जी ने तो कहा था; कि जो लड़के सरकारी मदद से चलने वाले स्कूल कालेजों में पढ़ते हों, उन स्कूलों को भी छोड़ दें। फिर वल्लभ भाई अपने पुत्रों को विलायत कैसे भेज सकते थे। वल्लभ भा० का सा से बड़ा गुण यही तो है कि वे जिस काम में पड़ते हैं, पूरे दिल से पड़ते हैं। दिल में कुछ ऊपर से कुछ, ऐसी बात वल्लभ भाई न स्वयं करते हैं न उनके सामने कोई दूसरा कर सकता है। वल्लभ भाई के सामने झूठी बात ठहर ही नहीं सकती।

असहयोग आन्दोलन में वल्लभ भाई ने बड़ी मिहनत से काम किया। गान्धीजी के गिरफ्तार होने के बाद आन्दोलन का समस्त भार उन्होंने अपने ऊपर लेलिया। विशेषतः गुजरात की पूरी जिम्मेदारी तो उन पर ही थी। गान्धी जी का कहना था कि देश में ऐसे स्कूल कालेज खुलने चाहिए, जो सरकारी सहायता लिये बिना ही चल सकें और जिनमें बालकों को देशभक्ति की शिक्षा दी जाय। वल्लभ भाई ने ऐसा एक स्कूल गुजरात में खोलने का निश्चय किया। लेकिन यह कोई मामूली बात तो थी नहीं। इसमें लाखों रुपये का खर्च था। वल्लभ भाई ने

इसके लिये बरमा तक की यात्रा की और लगभग दस लाख रुपया इकट्ठा करके गुजरात विद्यापीठ की स्थापना कर दी। गुजरात प्रान्त के जो लड़के स्कूल कालेज छोड़ चुके थे, उनको इस विद्यपीठ से बड़ा सहारा मिल गया और जो प्रोफेसर अपनी नौकरियाँ छोड़ आये थे, उनको भी इस विद्यपीठ में जगह मिल गई। इस प्रकार वल्लभ भाई ने एक असली काम करके देश भर को रास्ता दिखाया, जिसका अनुकरण करके देश के दूसरे नगरों में भी इसी प्रकार के विद्यापीठ खुले। हमारे संयुक्त प्रान्त में भी काशी के एक देशभक्त सेठ श्री शिवप्रसाद जी गुप्त ने 'काशी विद्यापीठ' स्थापित किया, जो आज भी चल रहा है और जिसके विद्यार्थियों में से अनेक आज हमारे प्रान्त के प्रसिद्ध नेता हैं। इसी प्रकार गुजरात विद्यापीठ ने भी गुजरात के लिये अनेक सुप्रसिद्ध देश सेवक दिये हैं जो आज भी जनता की सेवा में मग्न हैं।

बोरसद सत्याग्रह में

सन् १६२२ में वल्लभ भाई ने बोरसद सत्याग्रह को सिलसिले में एक बार ही सरकार से टक्कर ली और उसे नीचा दिखाया। बोरसद गुजरात का एक तालुका है। उन दिनों बोरसद में देवर बाबा नामक एक डाकू ने बड़ा उपद्रव मचा रक्खा था, तमाम जनता उससे परेशान थी और सरकार उसे पकड़ने की कोशिश करते करते थक गई, लेकिन उसे पकड़ नहीं सकी। कुछ ही दिनों बाद इस इलाके में एक मुसलमान डाकू उठ खड़ा हुआ और उसने भी दिन रात डाँके डालने शुरू कर दिये। जनता अब और भी परेशान हो गई और इन दोनों डाकुओं के आतंक से त्राहि-त्राहि करने लगी। सरकार ने जब यह देखा तो उसने किसी तरह मुसलमान डाकू को अपनी

तरफ मिला लिया और उसमें यह तय हुआ कि वह देवर बाबा को पकड़वा देगा। उस मुसलमान डाकू ने सरकार से नये-नये अथियार भी हासिल किये और चार-पांच हथियारबन्द पुलिस वाले भी उसकी मदद को दिये गये। उम्मीद यह थी कि अब देवर बाबा डाकू पकड़ा जावेगा। लेकिन इस मुसलमान डाकू ने सरकारी हथियारों की मदद से और ज्यादा डाके डालने शुरू कर दिये। इन डाकों में उन पुलिस वालों ने भी साथ दिया जो देवर बाबा को पकड़ने के लिये मुसलमान डाकू के साथ कर दिये गये थे।

इस प्रकार सरकार ने एक भयंकर गलती करके जनता को और भी परेशानी में डाल दिया। धीरे-धीरे हालत इतनी बुरी हो गई कि इलाके भर में शाम होते ही घर के दरवाजे बन्द करके लोग बैठ जाते थे। कोई दिन ऐसा नहीं जाता था, जब किसी-न-किसी गांव में डकैती न होती हो। जब जनता ज्यादा परेशान हो गई, तो उसने वल्लभ भाई तक अपने दुख की कहानी पहुँचाई, वल्लभ भाई बोरसद पहुँचे और उन्होंने तमाम बातों की जांच खुद की। इसी बीच सरकार ने एक दूसरा अन्याय यह किया कि गाँवों में डाकुओं को पकड़ने के लिये जो पुलिस तैनात थी उसका खर्चा गांववालों से ही वसूल करना शुरू कर दिया। वल्लभ भाई ने कहा कि यह ज्यादती है और उनके कहने पर गांव वालों ने इस पुसिल का खर्चा देने से इंकार कर दिया। इसके साथ ही वल्लभ भाई ने लगभग दोसौ स्वयंसेवक ऐसे तय्यार किये, जो दिन रात गाँवों में पहरा देते थे। वल्लभ भाई ने गाँव वालों को भी समझाया कि आप लोग रात भर अपने दर्वाजे खुले रक्खें, और जब डाकू आपके गाँव पर पर हमला करें, तो उनका डट कर मुकाबिला करें।

जो स्वयंसेवक वल्लभ भाई ने पहरा देने के लिये तैनात किये थे, उन्होंने कुछ ऐसे फोटो लिये, जिनसे यह साबित होता था कि जब डाकू गाँव पर हमला करते हैं, तो सरकारी पुलिसवाले या तो चारपाइयों के नीचे छिप जाते हैं, या किसी मकान में घुस कर बाहर से ताला लगा लेते हैं। इन फोटो के सहारे वल्लभ भाई ने सरकार को चुनौती दी कि जो सरकार डाकुओं से समझौता करती है और जिसकी पुलिस इतनी कायर है, उसको गांव वालों से पुलिस का खर्च वसूल करने का क्या हक है? पहिले तो बम्बई की सरकार ने वल्लभ भाई की इन खरी-खरी बातों पर बड़ी नाराजी दिखाई, लेकिन जब उसने देखा कि वल्लभ भाई इस नाराजी से डर जाने वाले नहीं हैं, तो उसने चुपचाप गाँव वालों से पुलिस टैक्स लेना बन्द कर दिया। उधर देवर बाबा डाकू वल्लभ भाई और उनके स्वयंसेवकों के पहुँचने का समाचार पाते ही ऐसा गायब हुआ कि फिर उसका पता ही नहीं लग सका। बोरसद के सत्याग्रह की इस विजय ने वल्लभ भाई के नाम को और भी ज्यादा चमका दिया।

साथियों से टक्कर

इसी बीच में काँग्रेस के कुछ नेताओं ने यह सोचा कि अब हमें कानून बनाने वाली सभाओं यानी ऐसेम्बली और कौंसिलों के भीतर जाकर सरकार से टक्कर लेनी चाहिये। दूसरी ओर कुछ नेताओं का ख्याल यह था कि हमें कौंसिलों और ऐसेम्बलियों से दूर रहना चाहिये और खादी तथा हिन्दू-मुसलिम एकता के काम में लगा रहना चाहिये। वल्लभ भाई दूसरे दल में थे और इस सिलसिले में उन्होंने पहिले दल के अपने साथियों का कड़ा विरोध किया। इसके बाद जब काँग्रेस ने

पहिले दल की बात मंजूर करली, तब भी वल्लभ भाई ने ऐसेम्बली या कौंसिलों के पचड़े में पड़ना मंजूर नहीं किया और इनसे अलग रह कर जनता की सेवा करते रहे।

नागपुर का झण्डा सत्याग्रह

कुछ ही दिन बाद नागपुर में फिर एक ऐसी घटना हो गई, जिसने वल्लभ भाई को लड़ाई के मैदानमें लाकर खड़ाकर दिया। बात यह थी कि १ मई १९२३ को नागपुर की पुलिस ने दफा १४४ लगा कर नागपुर के एक हिस्से सिविल लाइन्स में राष्ट्रीय झण्डा लेकर किसी जुलूस के जाने की मुमानियत कर दी। लेकिन नागपुर की कांग्रेस के स्वयंसेवकों ने सरकार का यह हुक्म मानने से इंकार कर दिया। इसी पर गिरफ्तारियाँ और सजायें शुरू हो गईं। कांग्रेस ने भी इस पर सरकार से पूरी टक्कर लेने का विचार किया और प्रत्येक दिन कांग्रेस के स्वयं सेवक झंडा लेकर उसी इलाके में जाने लगे और गिरफ्तार होने लगे। इन गिरफ्तार होने वालों में एक खास आदमी सेठ जमनालाल बजाज भी थे। सरकार ने सेठ जी को कैद की सजा देनेके साथ-साथ उन पर तीन हजार रुपया जुर्माना भी कर दिया और जब सेठ जी ने जुर्माना नहीं दिया, तो उनकी मोटर कुर्क करली। लेकिन पूरे नागपुर शहर में एक आदमी ऐसा नहीं निकला, जो उस मोटर को नीलाम में खरीद लेता। इस पर सरकार मोटर को काठियावाड़ ले गई। इन बातों ने नागपुर के सवाल को देशभर का सवाल बना दिया। कांग्रेस ने वल्लभ भाई से अनुरोध किया कि नागपुर के सत्याग्रह युद्ध की जिम्मेदारी वे अपने ऊपर लेलें। वल्लभ भाई ने इस अनुरोध को तुरन्त स्वीकार कर लिया और नागपुर पहुँच कर सत्याग्रह का संचालन करने लगे। इस युद्ध में वल्लभ भाई के

बड़े भाई श्री विट्ठल भाई ने भी बहुत सहायता की। इसका परिणाम यह हुआ कि सरकार ने घुटने टेक दिये और जो रोक लगाई थी, वह अपने आप वापस लेली। इसके साथ ही, जिन लोगों को इस सिलसिले में पकड़ा था, उनको भी छोड़ दिया। इस प्रकार वल्लभ भाई ने सरकार पर एक और विजय प्राप्त की, जिससे जनता का बल बढ़ा और कांग्रेस की इज्जत देश भर में काफी बढ़ गई। नागपुर के इस आन्दोलन में जिन लोगों ने वल्लभ भाई को पूरी मदद दी और उस लड़ाई में काफी तकलीफें उठाईं, उनमें एक आदमी 'भारत में अंग्रेजी राज्य' पुस्तक के लेखक श्री पं० सुन्दरलाल जी थे जो आजकल हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिये तन-मन से जुटे हुए देश की अत्यन्त महत्वपूर्ण सेवा कर रहे हैं। कांग्रेस ने अंग्रेज सरकार से जितनी लड़ाइयाँ लड़ी हैं उनमें नागपुर का यह झण्डा सत्याग्रह काफी महत्व रखता है और भारत की आजादी के इतिहास में इसकी कहानी सदैव बड़ी दिलचस्पी से पढ़ी जावेगी।

म्यूनिस्पल बोर्ड के सभापति

कुछ दिन पश्चात महात्मा जी जेल से छूट कर आये तब कहीं वल्लभ भाई का कुछ बोझ हलका हुआ। इसके बाद श्री वल्लभ भाई अहमदाबाद म्यूनिस्पल बोर्ड के सभापति चुने गये। इस पद पर आपने लग भग पांच वर्षों में अहमदाबाद नगर की इतनी सेवा की कि उसे कभी भूला नहीं जा सकता। नगर की गन्दगी दूर करने के लिये आपने कई उपयोगी योजनाएँ तय्यार कीं और उससे नगर की गन्दगी काफी दूर भी हुई। इसके साथ ही आपने अहमदाबाद के नगर निवासियों को भी यह समझाने का यत्न किया कि सफाई रखने की जिम्मेदारी स्वयं नागरिकों पर है और बिना उनके सहयोग

के केवल म्यूनिस्पल बोर्ड ही इस काम को अंजाम नहीं दे सकता। इसका परिणाम यह हुआ कि अहमदाबाद के नागरिक भी म्यूनिस्पल बोर्ड को भरसक सहायता देने लगे।

गुजरात की बाढ़ में

इन दिनों में ही यकायक गुजरात में भयंकर बाढ़ आ गई। सैकड़ों गाँवों में जल ही जल हो गया। लाखों आदमी संकट में पड़ गये और उनके बचाने का कोई रास्ता नज़र नहीं आता था। सरकारी अफसर हैरान और परेशान थे और वे सिर्फ लिखा पढ़ी में ही अपना समय व्यतीत कर रहे थे। वल्लभ भाई ने यह हाल देखा, तो शीघ्र एक रात में दो हज़ार स्वयं सेवकों को तय्यार कर के पानी से घिरे हुए स्थानों में जा पहुंचे इन स्थानों में पहुँचना अपनी जान पर खेलना था, क्योंकि भारी मूसलाधार वर्षा के कारण करीब चार हज़ार देहातों और कस्बों में पानी ही पानी दिखाई देता था और कभी-कभी तो ऐसा मालूम होता था, मानो यह जल प्रलय खास अहमदाबाद शहर को भी डुबो देगी। जिन इलाकों में पानी था, उनमें ज्यादातर मकान गिर गये थे और वहां के निवासियों को कहीं पैर रखने के लिये भी ठिकाना नहीं था। इन दिनों श्री वल्लभ भाई अहमदाबाद म्यूनिस्पल बोर्ड के चेयरमैन तो थे ही, साथ ही गुजरात प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के प्रधान भी थे।

जिस समय गुजरात में बाढ़ आई, उस समय गांधीजी देश भर का दौरा करने के बाद मैसूर रियासत के एक स्थान में विश्राम करने के लिये टिके हुए थे। लेकिन जब उन्होंने इस विपत्ति का हाल सुना, तो वे गुजरात आने के लिये तत्काल तैयार हो गये। पर वल्लभ भाई ने गान्धीजी से वहीं टिके रहने का जोरदार आग्रह किया। वल्लभ भाई गान्धीजी को

दिखाना चाहते थे कि गान्धीजी की शिक्षाओं का गुजरात पर कितना प्रभाव पड़ा है और उसने किस प्रकार अपना संगठन कर लिया है।

सरदार पटेल और उनके स्वयंसेवकों ने इस अवसर पर जो काम किया, उसने सरकार को भी दंग कर दिया। खेड़ा जिले का बेचारा कलक्टर कई दिनों से घिरा पड़ा था और उसके पास खाने के लिये एक दाना भी नहीं था। सरदार पटेल ने अन्त में उसकी सुध ली और उसको खाने पीने का सामान पहुँचाया, जिसे उसने बड़ी कृतज्ञता से स्वीकार किया। जिस गांवों के लिये सरकारी अफसर यह समझ बैठे थे। कि वहाँ सहायता पहुँचाई ही नहीं जा सकती, वहाँ पर भी कांग्रेस के स्वयंसेवक किसी-न-किसी प्रकार पहुँच ही जाते थे और ग्राम वालों की मदद करते थे इस काम का यह असर हुआ कि वल्लभ भाई का लोहा सरकार भी मानने लगी और वह उनसे पूछ-पूछ कर या उनकी सलाह लेकर काम करने लगी।

अकाल के दिनों में

कुछ ही दिनों में बाढ़ का संकट तो समाप्त हो गया, लेकिन गुजरात की फसल बाढ़ में नष्ट हो जाने से वहाँ भयंकर रूप से अकाल पड़ गया। सरकार की समझ में ही नहीं आता था कि इस अकाल की समस्या को कैसे सुलझाया जाय। लेकिन श्री वल्लभ भाई ने उसे रास्ता सुझाया, सरकार जानती थी कि यदि उसने वल्लभ भाई की बात नहीं सुनी, तो उसे भयंकर संकट का सामना करना पड़ेगा। इसलिये उसने चुपचाप करीब डेढ़ करोड़ रुपये की रकम अकाल के इलाकों में बाँटने की बात मँजूर करली। सरकार ने यह रकम बाँटने का काम भी

वल्लभ भाई के ही सहयोग से ही किया, जिसके कारण रुपया उन लोगों को ही मिल सका, जिनको वास्तव में सहायता मिलनी चाहिये थी। जो लोग मक्कारी से रुपया हड़प करना चाहते थे, उनकी तो वल्लभ भाई से माँगने की हिम्मत भी नहीं पड़ सकती थी। इस सरकारी रकम के अलावा श्री वल्लभ भाई ने जनता से भी लगभग तीन लाख रुपया इकट्ठा करके इस कार्य में व्यय किया। इसका परिणाम यह हुआ कि इस महा-विपत्त में गुजरात के लाखों व्यक्तियों की मुसीबतें हलकी हो गईं। हजारों आदमियों के प्राण बच गये और उनको अपने गिर पड़े मकानों को दुबारा बनवाने के लिये सहायता मिल गई। इस बाढ़ के दिनों में वल्लभ भाई ने जो सेवा की और जिस बुद्धिमान तथा प्रबन्ध कुशलता का परिचय दिया, उससे यह स्पष्ट हो गया कि वल्लभ भाई केवल लड़ना ही नहीं जानते, बल्कि समय आने पर उतनी ही उत्तमता से प्रबन्ध भी चला सकते हैं, जितनी उत्तमता से वे युद्ध का संचालन करते हैं।

बारडोली सत्याग्रह और सरदार की उपाधि

श्री वल्लभ भाई बाढ़ और अकाल पीड़ितों के इस सेवा कार्य से मुक्त हुए ही थे कि बारडोली, जो गुजरात का ही एक ताल्लुका है, बन्दोबस्त होने की खबर आई। बन्दोबस्त होने का अर्थ है, जमीन की और लगान तथा मालगुजारी की फिर से जांच पड़ताल। बारडोली के किसानों का यह अनुभव था कि जब भी बन्दोबस्त होता है, तभी उनका लगान और माल गुजारी बढ़ा दी जाती है। इसी आदत के मुताबिक सरकार ने इस बन्दोबस्त में भी लगान को सवाया कर दिया। बारडोली के किसानों ने इसका विरोध किया। किसानों का कहना था कि हम ने खेती में जो तरक्की की है उसमें हमको बहुत मेहनत तथा खर्च

करना पड़ा है। इस तरक्की में सरकार ने तो कोई सहयता दी नहीं है, इसलिये उसको लगान बढ़ाने का भी हक नहीं है। किसानों का यह भी कहना था कि अगर सरकार को लगान बढ़ाना ही था, तो उसको चाहिये था कि एक कमेटी मुकर्र करती, जिसमें किसानों के भी प्रतिनिधि होते। यह कमेटी सब बातों की पूरी-पूरी जाँच करती और तब जो लगान बढ़ना होता वह बढ़ाती।

किसानों ने अपनी एक सभा की और उसमें श्री वल्लभ भाई पटेल को भी बुलाया। वल्लभ भाई गये और वहाँ किसानों की बातें ध्यानपूर्वक सुनीं! इसके बाद वल्लभ भाई ने किसानों से कहा, आप लोगों ने जो बातें कही हैं वह तो सच हैं, लेकिन कोई कदम उठाने से पहिले उसके नतीजों के बारे में भी सोच लिजिये। पहिली बात यह याद रखिये कि यह सरकार से लड़ना है। पहिले हम सरकार से प्रार्थना करेंगे, उसकी खुशामद करेंगे, लेकिन इस पर भी उसने बात नहीं मानी, तो उससे लड़ेंगे भी। इस लड़ाई में हमको जो तकलीफें सहनी पड़ेगी, उसके लिये अगर आप तैयार हों, तब तो आप लड़ाई शुरू किजिये, वरना चुपचाप जो सरकार कहती है, उसको मान लिजिये। अगर आप के दिल में डर है, तो मैं आपको जबरदस्ती नहीं लड़ा सकता।' वल्लभ भाई की यह बात सुनकर किसानों ने कहा कि हम सब तरह की तकलीफें सहने के लिये तैयार हैं। आप एक बार हुक्म दीजिये, तो फिर देखिये कि सरकार चाहे जुल्म करते-करते थक जाय, लेकिन हम जुल्म सहते-सहते नही थकेंगे।

इस सभा के बाद वल्लभ भाई ने ६ फरवरी १६२८ को बम्बई के गवर्नर को एक पत्र लिखा कि आपकी सरकार ने बारडोली

ताल्लुके में जो लगान बढ़ाया है, उसकी वसूलयाबी तब तक मत कीजिये, जब तक उस पर दुबारा विचार न हो जाय। गवर्नर ने वल्लभ भाई की बात मानने से इन्कार कर दिया। इस पर वल्लभ भाई ने किसानों से कह दिया कि वे एक पाई भी लगान न दें और सरकार से पूरी तरह असहयोग करें। किसानों ने इस हुक्म की सूचना मिलते ही लगान देना बन्द कर दिया। अब सरकार और प्रजा में पूरी तरह लड़ाई शुरू हो गई।

लड़ाई का संचालन

इस लड़ाई के सबसे बड़े सेनापति वल्लभ भाई ही थे, इसलिए उनको 'सरदार' कहा जाने लगा। तभी से वल्लभ भाई के नाम के साथ 'सरदार' शब्द लगने लगा, जो आज भी उसी तरह कायम है। यह सरदार शब्द वल्लभ भाई के नाम के साथ ऐसा 'फिट' हुआ है कि आज तो अगर कोई सिर्फ सरदार कह दे तो सुनने वाला समझ लेता है कि कहने वाले का मतलब श्री वल्लभभाई पटेल से है। श्री वल्लभ भाई में 'सरदार' होने के सभी गुण मौजूद हैं।

श्री वल्लभ भाई ने इस लड़ाई को चलानेके लिए पूरे ताल्लुके को अनेक भागों में बाँट दिया और उनमें सत्याग्रह छावनी बना दीं। इन छावनियों में स्वयंसेवक रहते थे और एक परखा हुआ आदमी उनका नेता होता था। यह स्वयंसेवक रात को गाँवों में पहरा भी देते थे। इसके अलावा वल्लभ भाई ने ऐसे स्वयंसेवकों की भी एक सेना बनाई; जो चुपचाप सरकारी अफसरों के कामों पर नजर रखती थी। अगर किसानों में से कोई आदमी लगान अदा करने की बात करने लगता, तो उसकी रिपोर्ट भी यह स्वयंसेवक अपने नेताओं तक पहुँचा देते थे। वल्लभ भाई ने

इस सारे संगठन को इतना मजबूत बना लिया कि जो आज्ञा वे निकालते; वह चौबीस घंटे के भीतर-भीतर तमाम छावनियों में पहुँच जाती। अगर कोई स्वयंसेवक काम में ढील करता पाया जाता तो सरदार उसे तुरन्त घर लौटा देते। क्योंकि वे कहा करते थे कि अगर साँकल में एक कड़ी भी कमजोर हुई, तो पूरी साँकल कमजोर हो जाती है।

यह तो सत्याग्रहियों की तैयारी का हाल हुआ। अब सरकार की तैयारियों का हाल भी सुनिये। बम्बई के गवर्नर ने यह शुरू में ही कह दिया था कि बारडोली के इस आन्दोलन को कुचलने के लिये पूरे साम्राज्य की ताकत लगा दी जावेगी। अपनी इस बात को निभाने के लिये बम्बई की सरकार ने गुण्डों की एक फौज तैयार की, जो गाँव गाँव जाकर किसानों को मारती-पीटती, उनकी औरतों को छेड़ती और लूटमार करती थी। लेकिन किसानों पर इसका कोई असर नहीं पड़ा। सरकार ने लगान के बदले उनकी जमीन जायदाद कुर्क करनी शुरू की। अक्सर ऐसा होता कि सौ रुपये के बदले में दो हजार का सामान कुर्क कर लिया जाता। लेकिन कोई उस सामान को खरीदने वाला तक नहीं मिलता था। सरदार ने इंतजाम ही ऐसा कर रक्खा था कि प्रत्येक गाँव के बाहर कुछ स्वयंसेवक बैठे रहते। यह स्वयंसेवक जैसे ही यह देखते कि कुर्की करने वाले सरकारी अफसर आरहे हैं, वैसे ही बिगुल बजा देते। जिसकी आवाज सुनते ही गाँव के सभी लोग जंगलों में चले जाते थे। सरकारी अफसर गाँव में घुसने पर उसे सुनसान पाते। अब उनको कुरकी करने में यह मालूम करना भी मुश्किल हो जाता कि किस आदमी का कौनसा घर है। इसके अलावा कुरकी किये सामान को उठाने वाला आदमी भी उनको नहीं

मिलता। अगर उनको प्यास लगी, तो कोई ऐसा आदमी नहीं होता था जो उनको एक घूंट पानी भी पिला दे।

इस सत्याग्रह की लड़ाई में सरकार को उम्मेद थी कि बारडोली के मुसलमान किसान शायद उसका साथ दें। लेकिन मुसलमान किसानों ने अपने भाइयों के समान ही दृढ़ता दिखाई। अनेक मुसलमान किसानों की सरकारी गुण्डों ने हड्डी तोड़ डाली; लेकिन उन्होंने वल्लभ भाई का बिना हुक्म पाये लगान देना मंजूर नहीं किया। इस सत्याग्रह के नेताओं में से अनेक मुसलमान भी थे और उन्होंने हमेशा बड़ी बहादुरी से काम किया।

दुःख की बात यह थी कि इस सत्याग्रह के समय अनेक ऐसे आदमी भी थे, जो सरकार के साथ मिलकर अपने ही भाइयों पर बड़े-बड़े जुल्म कर रहे थे। ऐसे आदमियों में से तीन आदमियों के नाम बहुत मशहूर हुए। इन तीनों के नाम थे मि० दवे, मि० बेंजमिन और मि० गुलाबदास। जैसा कि नाम से ही प्रकट है, इन तीनों में से एक पारसी और दो हिन्दू थे। आज जो लोग बच्चों के दिमागों में यह जहर भरते रहते हैं कि मुसलमानों ने ही हमेशा देश के साथ विश्वासघात किया है, उनको बारडोली के सत्याग्रह का इतिहास पढ़ना चाहिये। इससे उनको मालूम होगा कि वहाँ हिन्दू सत्याग्रहियों पर जुल्म करने वाले हिन्दू भी थे; मुसलमान भी सत्याग्रहियों के साथी थे। वास्तव में बात यह है कि गुण्डे और बदमाश सभी जातियों में होते हैं। इसी प्रकार सच्चे और ईमानदार आदमी भी सभी जातियों में होते हैं।

कुछ दिनों बाद जब बारडोली से किसानों की भूखों मरने की नौबत आगई, तो सरदार ने देश भर से चन्दा भेजने का

अनुरोध किया। इस अनुरोध का समाचार मिलते ही देश से तो चन्दा आना प्रारम्भ हो ही गया, साथ ही फ्रांस, चीन, जापान, बेलजियम आदि देशों से भी चन्दा आया और सहानुभूति के पत्र मिलने लगे। जब सत्याग्रह ज्यादा उग्र हो गया तो बम्बई असेम्बली के अनेक सदस्यों ने भी असेम्बली से स्तीफा दे दिया। बारडोली ताल्लुके के जो मुखिया और पटवारी थे, उन्होंने भी स्तीफे दे दिये। देश भर के अनेक प्रसिद्ध आदमी बारडोली का हाल-चाल देखने पहुँचे और वहाँ जो कुछ देखा, उसे देखकर दङ्ग रह गये। इनमें से कुछ लोग ऐसे भी थे; जो सत्याग्रह के विरोधी थे। लेकिन जब बारडोली से चले तब सत्याग्रह के पक्षपाती हो गये थे। इस समय चारों ओर वल्लभ-भाई के नाम की धूम थी। सरकार ने अपनी सख्ती बढ़ाकर वल्लभ भाई को नीचा दिखाने की काफी कोशिश की। किसानों को बड़े-बड़े लालच दिये गये। उनको धमकाया गया, फुसलाया गया, लेकिन किसी ने एक कौड़ी भी लगान में नहीं दी। इस लड़ाई में किसानों की स्त्रियों ने भी खूब भाग लिया। अन्त में सरकार को होश आया। उसने समझ लिया कि इस प्रकार वल्लभ भाई को नीचा नहीं दिखाया जा सकता। अन्त में किसी प्रकार समझौता करके सरकार ने अपनी इज्जत रक्खी। इस जीत से हिन्दुस्तान में वल्लभ भाई का जयजयकार हो उठा। जगह-जगह वल्लभ भाई का एक विजयी सेनापति की तरह सम्मान किया गया। वल्लभ भाई अब देश के सब से प्रमुख नेताओं में से समझे जाने लगे।

पहिली गिरफ्तारी

बारडोली की विजय के पश्चात् सरदार वल्लभ भाई रचनात्मक कामों में लगे रहे। खादी, अछूतोद्धार, हिन्दू-मुस्लिम

एकता इत्यादि कामों को बढ़ाने में आप अपना पूरा समय लगाते थे। इसके साथ ही गान्धी जी के आदर्शों को भी गुजरात के किसानों को समझाया करते थे। सरदार के इस काम की बदौलत अब भी गुजरात प्रान्त हमेशा गांधी जी के आदर्शों पर चलने में दूसरे प्रान्तों से आगे रहता है। कांग्रेस के आन्दोलनों में उसने हमेशा आगे बढ़कर भाग लिया है।

कुछ दिनों बाद ३१ दिसम्बर १९२९ को लाहौर कांग्रेस ने पूर्ण स्वाधीनता का प्रस्ताव पास किया यानी यह घोषणा कर दी कि आज से हिन्दुस्तान की माँग यह है कि हमारे देश का राजकाज बिलकुल हमारे ही हाथों में रहना चाहिए, अंग्रेजों का इससे कोई मतलब न हो। गान्धी जी ने अपनी ग्यारह शर्तें वायसराय के पास भेज दीं। सरदार वल्लभ भाई समझ गये कि यह शर्तें मंजूर तो होने की नहीं हैं। अंग्रेज का स्वभाव ही यह है कि वह हमेशा ताकत के आगे ही झुकता है। इसलिए आन्दोलन तो करना ही पड़ेगा। सरदार ने तुरन्त अपने प्रान्त में आन्दोलन की तैयारी शुरू कर दी। वे गाँव-गाँव घूमकर किसानों को इस आन्दोलन का महत्व समझाने लगे। इसी सिलसिले में ७ मार्च १९३० को सरदार गुजरात के एक गाँव रास में पहुँचे। सरदार को रास की सभा में व्याख्यान देना था। लेकिन उस इलाके के कलक्टर ने सरदार पर यह नोटिस तामील करा दिया कि आप यहाँ किसी प्रकार का भाषण इत्यादि न दें। सरदार ने कलक्टर की इस आज्ञा को नहीं माना और भाषण दिया। फलतः सरदार गिरफ्तार कर लिये गये। सरदार की यह पहिली गिरफ्तारी थी, जिसमें उनको ३ महीने की कैद और पाँच सौ रुपये जुर्माने की सजा सुनाई गई। जुर्माना न देने पर तीन सप्ताह की कैद और भुगतनी पड़ी।

सरदार को जेल में बड़ा कष्ट उठाना पड़ा। इन कष्टों की वजह से तीन महीने के भीतर ही सरदार का वजन १५ पौण्ड कम हो गया। लेकिन सरदार कहा करते हैं कि—

शूर संग्राम को देख भागे नहीं,
भागे सो शूर नहीं।

सरदार भी सच्चे शूर हैं, इसलिए वे तकलीफों और परेशानियों से कभो घबड़ाते नहीं। उन्होंने हँसते-हँसते सब तकलीफें सहीं और बाहर निकलकर फिर अपना वही काम शुरू कर दिया।

दूसरी गिरफ्तारी

सरदार जब जेल से छूटे, तो उन्होंने देखा कि तमाम हिन्दुस्तान में सत्याग्रह-आन्दोलन जोरों से चल रहा है। हजारों-लाखों स्त्री-पुरुष और छोटे-छोटे बच्चे आन्दोलन में वीरता-पूर्वक भाग ले रहे हैं और सरकारी पुलिस की लाठियों का मुकाबिला हँसते-हँसते कर रहे हैं। जिन लड़कियों को घर से अकेले निकलने में भी डर लगता था, वही अब अंग्रेज सार्जेण्टों से जूझ जाती थीं। सार्जेण्ट बहुत कोशिश करते थे, लेकिन लड़कियों के हाथों से झण्डा नहीं छुड़ा पाते थे। उस समय धरसाणा और वडाला में भी मोर्चे लगे हुए थे और इन स्थानों में नमक बनाने के लिए सत्याग्रहियों के जत्थे के जत्थे जाते थे और वहाँ से बुरी तरह घायल होकर लौटते थे। यह तमाम आन्दोलन पं० मोतीलाल जी नेहरू के सेनापतित्व में चल रहा था।

कुछ दिनों बाद सरकार ने पं० मोतीलाल जी नेहरू को गिरफ्तार कर लिया। नेहरू जी ने गिरफ्तार होते ही सरदार वल्लभ भाई को अपनी जगह सेनापति बनाने की घोषणा कर दी। अब सरदार पर पूरे हिन्दुस्तान के आन्दोलन का बोझ

था। सरदार ने इस बोझ को प्रसन्नता से सँभाल लिया और आन्दोलन का भली प्रकार संचालन करने के लिए बम्बई पहुँचे। उन दिनों इस आन्दोलन का सब से मुख्य केन्द्र बम्बई बना हुआ था।

१ अगस्त को लोकमान्य तिलक की बरसी का दिन है। देश भर में यह दिन बड़ी शान के साथ मनाया जाता है। बम्बई में भी उस दिन एक बहुत बड़ा जुलूस निकला। इस जुलूस में सरदार वल्लभभाई, मालवीय जी, डा० हार्डीकर और हमारे प्रान्त के मुस्लिम नेता स्वर्गीय श्री तसद्दुकअहमद खां शेरवानी भी थे। सरकार ने इस जुलूस को विक्टोरिया टर्मिनस के सामने रोक दिया और एलान किया कि यह जुलूस गैरकानूनी है, इसलिये इस जुलूस को फौरन भंग कर देना चाहिये। जुलूस आगे न बढ़े, इसलिए हथियारबन्द पुलिस का घेरा जुलूस के आगे डाल दिया गया। इस पर जुलूस वहीं बैठ गया और शाम के चार बजे से दूसरे दिन सुबह के ८ बजे तक उसी जगह बैठा रहा। अन्त में सरकार ने जुलूस में जो बहिनें थीं उनको और सरदार तथा अन्य नेताओं को गिरफ्तार करके जेल भेज दिया और उसके बाद जुलूस के लोगों पर बुरी तरह लाठियाँ चलवाईं। इस लाठीचार्ज में सैकड़ों आदमियों के सर फूट गये। फिर भी बम्बई के सत्याग्रही आन्दोलन के मैदान में जमे ही रहे।

वल्लभ भाई इत्यादि पर मुकदमा चला और गैरकानूनी जुलूस में भाग लेने के अपराध में सब पर सौ-सौ रुपया जुर्माना या तीन-तीन महीने की सजा सुना दी गई। मालवीय जी का जुर्माना किसी अन्य आदमी ने भर दिया और वे जेल से छोड़ दिये गये। लेकिन सरदार ने जुर्माना भरने से इन्कार

कर दिया। इसपर सरदार फिर जेल भेज दिये गये। गुजरात का शेर एक बार फिर सींखचों में बन्द कर दिया गया, लेकिन उसकी दहाड़ सींखचों के भीतर से भी सरकार को कँपा देती थी और अपने साथियों में उत्साह भरती थी।

रिहाई और राष्ट्रपति की गद्दी पर

कुछ दिनों बाद यानी सन १९३१ के आरम्भ में गान्धी इर्विन समझौता हुआ और सरकार को कांग्रेस के आन्दोलन में जेल गये हुये सभी राजनैतिक बन्दी छोड़ने पड़े। सरकार ने जो आर्डीनेन्स बनाये थे, उनको भी वापिस कर लिया। इसी समझौते के अनुरूप सरदार भी जेल से छूटे। उस वर्ष करांची में कांग्रेस का सालाना जल्सा हुआ। देश भर ने इस जल्से का सभापति सरदार वल्लभ भाई को चुना।

यह कांग्रेस बड़ी अजीब हालतों में हुई। क्योंकि एक तरफ तो सरकार पर कांग्रेस को जो विजय मिली थी, उससे प्रत्येक देश वासी का हृदय उत्साहित था और दूसरी तरफ सरदार भगतसिंह और उनके दो बहादुर साथियों को सरदार ने फाँसी देदी थी, इसलिये हर एक का दिल दुख से भी भरा हुआ था। इसी फाँसी की वजह से सरदार ने अपने जुलूस के प्रोग्राम को रद्द कर दिया। शायद यह पहिली कांग्रेस थी, जो इतनी सादगी के साथ हुई थी।

सरदार वल्लभ भाई ने सभापति की कुर्सी से जो व्याख्यान दिया, वह भी बहुत छोटा और साफ साफ बातों से भरा हुआ था। सरदार की आदत है कि वह बहुत थोड़ा बोलते हैं, लेकिन जो कुछ कहते हैं, उसमें खरी और साफ बातें ही होती हैं। उन दिनों कुछ ऐसे आदमी थे जो इस समझौते की बुराई करते थे।

सरदार ने अपने भाषण में उन लोगों को समझाया कि समझौता न होने से क्या नुकसान होता और समझौता हो जाने से क्या फायदा हुआ। इसी वक्त खबर मिली कि संयुक्तप्रान्त के कानपुर नगर में हिन्दू-मुसलमानों का भंयकर बलवा होगया, जिसमें संयुक्तप्रांत के मशहूर कांग्रेसी नेता श्री गणेशशंकर विद्यार्थी बीच बचाव करते हुये मारे गये। इस पर करांची कांग्रेस ने एक जांच कमेटी कानपुर के बलवे की जांच करने के लिये मुकर्रर करदी। इस जांच कमेटी ने जो रिपोर्ट दी थी, उसमें इस बात के काफी सबूत थे कि कानपुर का यह बलवा पुलिस अफसरों की बदमाशी से हुआ था।

करांची कांग्रेस के बाद गांधीजी विलायत गये। इसी बीच हिन्दुस्तान में तमाम काम को चलाते रहने की पूरी जिम्मेदारी सरदार पर रही। क्योंकि सरदार कांग्रेस के सभापति थे। इस जिम्मेदारी को निभाना आसान बात नहीं थी, क्योंकि सरकार के छोटे-छोटे अफसर कांग्रेस वालों की जीत हो जाने से बहुत चिढ़ गये थे और वे हमेशा कुछ-न-कुछ ऐसे काम करते थे जिससे कांग्रेस वालों का अपमान होता था। इस बर्ताव से नाराज होकर कांग्रेस वाले सत्याग्रह की तैयारी करते थे, लेकिन गांधीजी कह गये थे कि जब तक मैं वापस न आजाऊं, तब तक सरकार चाहे जितनी बेईमानी करे लेकिन तुम लोग अपने वचन को भंग मत करना और न कोई ऐसा काम करना, जिससे सरकार यह कह सके कि कांग्रेस ने समझौता को भंग करने वाला काम करके हमको दमन के लिये मजबूर कर दिया। यही वजह थी कि सरकार के बर्ताव पर हमेशा के लड़ाके सरदार वल्लभ भाई को झुंझलाहट तो बहुत आती थी, लेकिन उन्होंने देश के किसी भी भाग में अपनी ओर से कोई

काम ऐसा नहीं होने दिया, जिससे समझौता भंग होता हो। सरदार के लिये सबसे कठिन काम यही था।

फिर गिरफ्तार

गांधीजी विलायत से खाली हाथ लौटे और देश भर में फिर सत्याग्रह की धूम मच गई। सरकार ने हिन्दुस्तान भर में कांग्रेस का संगठन गैर कानूनी करार दे दिया। कांग्रेस के बड़े बड़े नेताओं से लेकर छोटे-से-छोटे स्वयंसेवक भी जेलों में ठूस दिये गये। सरदार तो कांग्रेस के मुखिया ठहरे, इसलिये उनको तो सरकार गिरफ्तार करती ही। इस प्रकार सरदार एकबार फिर जेल में ठूस दिये गये।

यह सत्याग्रह बहुत दिनों तक चलता रहा, लेकिन इसके बाद अनेक कारण ऐसे हो गये, जिससे सत्याग्रह स्थगित कर दिया गया। इस पर अन्य नेता तो छोड़ दिये गये, लेकिन सरदार को नहीं छोड़ा गया। कांग्रेस ने इस बीच जो महत्व-पूर्ण फैसले किये, उनमें सरदार कांग्रेस के सभापति होने पर भी भाग नहीं ले सके। शायद सरकार डरती थी कि कहीं कांग्रेस ने आन्दोलन चलाने का फैसला फिर से कर लिया, तो सरदार की वजह से खास तौर पर गुजरात में आन्दोलन की ताकत बहुत बढ़ जावेगी।

रिहाई और देश भर का दौरा

इसी बीच जेल में सरदार बीमार पड़ गये। उनका स्वस्थ्य दिनोंदिन गिरने लगा। इसी प्रकार जेल में बीमार पड़ कर कुछ ही दिन पहिले पं० मोतीलाल जी नेहरू का स्वर्गवास हो चुका था। इसीलिये अब सरदार के बीमार पड़ने की खबरें देश को मिलीं, तो देश भर में बड़ी चिन्ता प्राप्त हो गई।

सरकार ने भी इस खतरे को उठाना उचित नहीं समझा और सन १९३४ के अन्त में सरदार को जेल से रिहा कर दिया। डाक्टरों ने सरदार को सलाह दी कि अब कुछ दिनों तक किसी अच्छी आबहवा के मुकाम पर रह कर आपको अपना स्वास्थ्य सुधारना चाहिये। सरदार को यह बात पसन्द आई वे किसी ऐसे स्थान पर जाने की सोच ही रहे थे कि कांग्रेस ने ऐसेम्बली और कौंसिलों में जाने का फैसला कर दिया। उस समय इस फैसले का मतलब आज की तरह आसान नहीं था। क्योंकि आज तो कॉंग्रेस की तरफ से जो आदमी खड़ा होता है, वही चुनाव में जीत जाता है। लेकिन उस समय जो लोग कांग्रेस को वोट देना भी चाहते थे, वे बेचारे जमीदारों साहूकारों और सरकारी अफसरों के डर से नहीं देते थे। इस चुनाव में हिस्सा लेकर कांग्रेस यह दिखाना चाहती थी कि देश में कॉंग्रेस अब भी जिन्दा है और उसका जनता पर भारी प्रभाव है। दूसरी तरफ सरकार इस बात के लिये तुली हुई थी कि कांग्रेस का एक भी उम्मेदवार कामयाब न हो, जिससे दुनिया में यह ढिंडोरा पीटा जा सके, कि हिन्दुस्तान की जनता कॉंग्रेस के साथ नहीं है। इसलिये जो लोग स्वाराज्य की बात करते हैं, वे सिर्फ अपने मतलब के लिये ही इस प्रकार का शोर मचाया करते हैं। अतः उनकी बात पर ध्यान नहीं देना चाहिये।

सरदार ने यह हालत देखी, तो स्वास्थ्य सुधारने के लिये किसी स्थान पर जाने का विचार छोड़ दिया और कांग्रेस उम्मीदवारों का विचार करने के लिये देश भर का दौरा करने लगे। इस वक्त सरकार ने अनेक पार्टियाँ कांग्रेस के मुकाबिले खड़ी करदी थीं, जिनमें से एक पार्टी हिन्दू महासभा थी। कुछ बड़े-बड़े हिन्दू-मुसलमान जमीदार भीतर-ही-भीतर तो आपस

में मिले हुए थे और जो कुछ सरकारी हुक्म होता था, उस पर चलने को तैयार थे और बाहर जनता में आकर हिन्दू ज़मीदार हिन्दुओं से कहते थे कि देखो कांग्रेसको वोट मत देना, क्योंकि कांग्रेस तो मुसलमानों की पक्षपात करती है। इसी प्रकार मुसलमान ज़मीदार मुसलमानों से कहते थे कि देखो, कांग्रेस को वोट मत देना क्योंकि कांग्रेस मुसलमानों को मिटा देना चाहती है और देश में हिन्दू राज कायम करना चाहती है। यह लोग इस प्रकार का प्रचार तो करते थे, साथ ही इनके पास रुपये-पैसे ज़मीदारी का रोब-दाब और सरकारी अफसरों की ताक़त भी थी। इसीलिये उम्मेद यह थी कि यही लोग चुनाव में जीतेंगे।

लेकिन सरदार ने देश भर में दौरा करके इन लोगों के सारे मनसूबे मिट्टी में मिला दिये। सरदार जहाँ जाते, वहाँ हजारों लाखों आदमी इकट्ठे होकर सरदार का स्वागत करते। सरदार उन लोगो से यही कहते कि जिन लोगों ने देश के लिये त्याग किया है, उनको ही वोट दो। परिणाम यह हुआ कि देश भर में कांग्रेस की ही जीत हुई और सरकार तथा उसके पिट्ठू मुँह देखते रह गये। अब कांग्रेस के विरोध में जो लोग खड़े हुए, उनमें से अनेकों की तो ज़मानत तक ज़ब्त हो गई। कांग्रेस की जीत का विदेशों पर प्रभाव पड़ा।

इस चुनाव में देश भर का दौरा करने के अलावा सरदार को सबसे मुश्किल काम यह करना पड़ा कि कांग्रेस ने चुनाव लड़ने के लिये जो कमेटी बनाई थी, जिसे पार्लियामेंट्री बोर्ड कहते हैं, उसके सभापति सरदार ही थे। इसलिये किस जगह से कौन-सा उम्मेदवार खड़ा हो इसका निर्णय भी सरदार को ही करना पड़ा था। कई जगहों पर ऐसा होगया

था कि कई आदमी खड़ा होना चाहते थे। इन में से कुछ लोगों ने सरदार के फैसले पर भी असर डालने की कोशिश की। यानी सरदार से कहा कि मेरे हलके में तो मेरा इतना ज्यादा असर है कि अगर मुझे कांग्रेस ने खड़ा नहीं किया, तो मैं कांग्रेस के विरोध में खड़ा होकर जीत जाऊँगा लेकिन सरदार ने ऐसी बात कहने वाले आदमी को हर्गिज़ खड़ा नहीं किया। उनका कहना था कि हमें हार जाना मंजूर है, लेकिन ऐसे आदमी को खड़ा करना मंजूर नहीं है। ऐसी बात करने के अपराध में उन्होंने अनेकों आदमियों को कांग्रेस से निकाल दिया सच बात तो यह है कि सरदार अपने सिपाही को जितना प्यार करते हैं, हुक्म अदूली करने पर उसे सजा भी उतनी कड़ी देते हैं, अनुशासन के वे बहुत पाबन्द हैं।

बड़ी ऐसेम्बली का चुनाव समाप्त होने पर जब नये कानून के मुताबिक सूबों की ऐसेम्बली के चुनाव हुए, तब सरदार ने फिर एकबार देश भर का दौरा किया। अपने प्रान्त में तो वे गये ही नहीं। उनका कहना था कि गुजरात से तो कांग्रेस के खिलाफ खड़ा होकर कोई भी आदमी सफल हो ही नहीं सकता। इस चुनाव के समय सरदार वल्लभ भाई के जोशीले भाषणों से कांग्रेस को चुनाव जीतने में बहुत मदद मिली। इस चुनाव में भी करीब-करीब सब जगह कांग्रेस वाले ही जीते और हिन्दू महासभा इत्यादि के उम्मीदवारों को हार जाना पड़ा।

इन चुनावों के बाद बहुत से सूबों में कांग्रेस ने मिनस्ट्री बनाई। कांग्रेस के मिनिस्टर किस तरह काम करें और कौन-कौन से कानून बनायें। इसका फैसला करने के लिये कांग्रेस ने जो कमेटी बनाई, उसके सभापति भी सरदार ही बनाए

गये। इस पद पर रह कर सरदार को बहुत मिहनत करनी पड़ी। इस जमाने में सरदार ने डा० खरे को कांग्रेस से निकाल दिया, बात यह थी कि डा० खरे कांग्रेस की तरफ से यानी सी० पी० में मिनिस्टर थे। लेकिन वे वहाँ के अंग्रेज गवर्नर से मिल गये और मनमाना काम करने लगे। सरदार ने देखा कि डा० खरे के इस काम से देश की इज्जत धूल में मिलती है, इसलिए डा० खरे से अपना तरीका सम्हालने और अपने पिछले कामों की माफी माँगने के लिए कहा। डा० खरे ने इसकी पर्वाह नहीं की। इसका नतीजा यह हुआ कि सरदार ने डा० खरे को कांग्रेस से निकाल दिया। सी०पी० की मिनिस्टरी भी डा० खरे को छोड़ देनी पड़ी और जिस गवर्नर के बल पर डा० खरे झूम रहे थे, वह भी उनको नहीं बचा सका। उस दिन से डा० खरे कांग्रेस, गांधी जी और सरदार पटेल के खिलाफ हो गये और उन्होंने हिन्दू हित की पुकार मचानी शुरू कर दी। बीच बीच में सरकार ने उनको नौकरी देकर उनके आँसू पोंछने की कोशिश की, लेकिन जब अंग्रेज भी हिन्दुस्तान छोड़ गये, तब डा० खरे अलवर रियासत के प्रधान मंत्री हो गये। वहाँ उन्होंने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का बहुत काम किया। कहा तो यह भी जाता है कि गांधीजी की हत्या में भी डा० खरे का हाथ था। आज कल वे नागपुर में नजरबन्द हैं।

सन् १६४२ की महाक्रान्ति में

इसके पश्चात् सन् १६३६ में योरुप का दूसरा महायुद्ध

आरम्भ हुआ। कांग्रेस ने अंग्रेजों से कहा कि इस लड़ाई में तुम हिन्दुस्तान से मदद तो चाहते हो. लेकिन यह तो बताओ कि इस लड़ाई को तुम क्यों लड़ रहे हो? अगर तुम इस लिये लड़ाई लड़ रहे हो, जिससे तुम्हारा राज ज्यों-का-त्यों कायम रहे, तो हिन्दुस्तान को इस लड़ाई से क्या मतलब। क्योंकि तुम्हारी जीत का मतलब तो यह होगा कि हिन्दुस्तान की गुलामी और भी मजबूत हो जावेगी। और अगर तुम इस लिये लड़ाई लड़ रहे हो, जिससे जर्मनी ने जिन देशों को गुलाम बनाया है, वे आजाद हो जाँय, तो तुमको चाहिये कि हिदुस्तान को भी आजाद कर दो। या यह बतादो कि लड़ाई के बाद फौरन ही तुम हिन्दुस्तान छोड़ कर चले जाओगे।

अंग्रेजों ने कांग्रेस की इस सीधी-सी मांग के जवाब में बहुत-सी गोलमोल बातें की, लेकिन उन बातों में आने वाली तो कांग्रेस थी नहीं। इसलिये उसने ऐलान कर दिया कि जब तक अंग्रेज हमारी बात का जवाब नहीं देंगे, हम भी लड़ाई में कोई मदद नहीं देंगे, अंग्रेजों ने इस पर भी ध्यान नहीं दिया और जबरदस्ती लड़ाई में मदद हासिल करते रहे। अरबों रुपया हिन्दुस्तान की गरीब जनता से लड़ाई के लिए चन्दे के रूप में जबरदस्ती छीन लिया गया। इस चन्दे में ज्यादातर रुपया तो मुकामी अफसर हजम कर गये। इसी तरह जिन इलाकों को खतरनाक समझा गया, वहाँ फौज के लिये गाँव के गाँव खाली करा लिये गये। बंगाल, आसाम और उड़ीसा में इस प्रकार के बहुत से गांव खाली कराये गये। कायदा तो यह है कि जब सरकार इस तरह गांव खाली कराती है, तो गाँव वालों को रहने का दूसरी जगह इन्तिजाम करती है और गाँव वालों को हर्जाना भी देती है। लेकिन अंग्रेजों ने इस कानून का पालन

भी नहीं किया। वे चाहें जिस गांव में घुस जाते और वहां के निवासियों को मार-पीट कर निकाल देते थे।

कांग्रेस अपने देशवासियों पर होने वाले इस अत्याचार को सहन नहीं कर सकी और उसने 'अंग्रेजो भारत छोड़ो' का नारा लगाया।

सरदार वल्लभ भाई पटेल ने सन १९४२ का यह आन्दोलन शुरू होने से पहिले जो व्याख्यान दिये, उनमें इतना जोश और गरमी थी कि सरकार हक्की-बक्की रह गई। सरदार ने साफ-साफ कहा कि यह आन्दोलन तो एक खुली बगावत होगी, और जो एक हफ्ते से ज्यादा नहीं चलेगी और जिससे या तो हमेशा के लिये समाप्त हो जावेंगे या विजयी होंगे। इसी प्रकार के व्याख्यान नेताओं के भी थे, जिससे घबड़ा कर सरकार ने आन्दोलन शुरू होने से पहिले ही सभी नेताओं को गिरफ्तार कर लिया। इन गिरफ्तारियों के बाद देश में जो आन्दोलन चला, उसकी कहानी सभी को मालूम है।

सरदार वल्लभ भाई भी अन्य नेताओं के साथ गिरफ्तार करके अहमदनगर के किले में बन्द कर दिये गये। कहा जाता है कि आन्दोलन में जो कुछ हुआ, उसकी योजना बनाने में सरदार ने प्रमुख रूप से भाग लिया था। सरकार ने शुरू में तो बड़ी-बड़ी धमकियाँ दीं और नेताओं से कहा कि वह उन पर खुली अदालत में मुकदमा चलावेगी। लेकिन सरकार की हिम्मत

मुकद्दमा चलाने की नहीं पड़ी। आखिर १५ जून १९४५ को सरदार जेल से रिहा होकर बाहर आये। इसके बाद सन् १९४६ में एकबार फिर ऐसेम्बली का चुनाव हुआ, जिसका संगठन सरदार ने ही किया था।

इसके बाद जब कांग्रेस ने राज-काज सँभाला तो सरदार को भारत का उपप्रधात मंत्री बनाया गया।

इस समय सरदार के हाथ में तीन सरकारी महकमें हैं। एक महकमा रेडियो का है। दूसरा महकमा देश में इंतिजाम रखने का है और तीसरा महकमा रियासतों का है। खासतौर पर इस तीसरे महकमे का काम सरदार ने इतनी चतुराई से किया है कि दुश्मन भी उनकी तारीफ करते हैं। आज अनेकों रियासतें सूबों में मिला दी गई हैं और अनेकों रियासतों को मिला जुला कर उनके संघ बना दिये गये हैं। यह रियासतें चाहती तो यह थीं कि अंग्रेजों के जाने के बाद उनको पूरी आजादी मिल जाय, जिससे वे अपनी प्रजा पर मनमाने अत्याचार कर सकें। इसलिये उन्होंने कांग्रेस सरकार से लड़ने के लिये हथियार भी इकट्ठे कियेलेकिन सरदार ने उनकी इच्छा पूरी नहीं होने दी। उन्होंने एक-एक रियासत को लिया उससे अपनी बात मनवा ली। वास्तव में सरदार ने सैकड़ों वर्षों का काम कुछ ही दिनों में निबटा दिया है।

सरदार अब वृद्ध हो गये हैं, लेकिन उनमें जवानों जैसी फुर्ती है। गान्धीजी की हत्या ने सरदार के चित्त पर बहुत प्रभाव डाला है ईश्वर करे सरदार चिरंजीव हों और हमारे देश को हमेशा उनकी सेवायें मिलती हैं।

———